दिवाली मिलन समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

रचनात्मक मंच द्वारा आयोजित दिवाली मिलन समारोह में आप सभी को दिवाली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई।

दिवाली का यह पर्व सबके जीवन में खुशी लाए, समृद्धि लाए और उल्लास लाए। आपकी जो संस्कार और संस्कृति है, वह अपरिग्रह मानव सेवा है। आचार्य तुलसी से आचार्य महाश्रवण जी की यात्रा में आपका संदेश है कि आपके प्रयासों से समाज के सभी वर्गों में खुशी आए, उल्लास आए और सभी के जीवन में रोशनी आए।

मैं रचनात्मक संघ के सभी पदाधिकारियों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने रचनात्मक मंच के माध्यम से समाज को जोड़ने का काम किया। उसके माध्यम से समाज के अंदर अच्छी संस्कृति, संस्कार, आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ किस तरीके से हमारे प्रयासों से समाज के अंतिम व्यक्ति, गरीब, वंचित व्यक्ति की सेवा की जाए, इसके लिए हमारा समाज शुरू से ही मानवीय सेवा का काम करता रहा है। मुझे अभी कुछ दिन पहले ही महाश्रवण जी की यात्रा के समापन पर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला। उसके पहले मैंने भीलवाड़ा में भी आचार्य जी का दर्शन किया और उनका आशीर्वाद लिया।

जिस तरीके से तप, तपस्या, समपर्ण और सेवा से आचार्य जी ने देश के सभी राज्यों और अन्य देशों के अंदर भी समाज के बदलाव के लिए, व्यक्ति के जीवन में बदलाव के लिए एक अच्छी संस्कृति-संस्कार पहुँचे, ताकि वह अभाव, वंचित, गरीब, कुरीतियों में जकड़े समाज में एक सामाजिक परिवर्तन ला सके, जिससे एक नई रोशनी आ सके। आपने उनकी त्याग, समर्पण, सेवा और आचार्य तुलसी के विचारों को आगे बढ़ाया।

अहिंसा के मार्ग पर चलकर, सत्य के मार्ग पर चलकर किस तरीके से समाज मानवीय मूल्यों को स्थापित करके मानव सेवा का काम कर सकता है, इसीलिए आज मांगेलाल जी सेठिया साहब को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड मिला है। इनकी सेवाएं बहुत से समाजों में हैं। इन्होंने समाज के अलग-अलग क्षेत्रों में साहित्यिक रूप से अपने विचारों से भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों-विचारों को लेकर, आचार्य तुलसी जी से लेकर आचार्य महाश्रवण जी की यात्रा को देश व समाज तक पहुँचाने का काम किया।

आज स्वर्गीय मूलचंद जी मालूच साहब के पुत्र विकास मालूच जी है। उनके पिताजी जी ने जो सेवा और पुण्य किया था, उस पुण्य का लाभ आने वाली पीढ़ी को मिलता है। हमारी संस्कृति, संस्कार और समाज में जो कुछ भी सम्मान मिला है, हमारी पूर्ववर्ती पीढ़ी ने संपूर्ण समाज के लिए सेवा और समर्पण से काम किया है। उसने हर गरीब और वंचित व्यक्ति की जीवन को बदलने के लिए काम किया। उसी सेवा के कारण समाज के और लोग भी हमारा सम्मान करते हैं।

मुझे आशा है कि समाज की आने वाली पीढ़ी भी हमारे लोगों से प्रेरणा लेगी। आचार्यों के विचार, उनके संदेश एवं उनके जीवन से हम प्रेरणा लेंगे और इसी तरीके से समाज में काम करते रहेंगे।

आज कन्हैयालाल जी जैन साहब, विकास मालूच जी, हरिकिशन जी, अग्रवाल साहब, अभी नरेन्द्र नाडा जी मुझे नजर नहीं आ रहे हैं। जितेन्द्र भाटिया जी, शिवकरण मल्होत्रा जी और लक्ष्मण जी मुझसे आग्रह कर देते हैं। ये लोग कार्यक्रम की चर्चा करते हैं, लेकिन मैं तो कार्ड देखता हूँ कि आपको आना है और उनका प्यार-स्नेह ऐसा ही है। इसी तरीके से मेरा तेरापंथ समाज के लोगों से बड़ा नजदीक का संबंध है।

समाज के अलग-अलग लोग, चाहे चिकित्सा के क्षेत्र में हो, चाहे शिक्षा के क्षेत्र में हो, हर मानवीय दृष्टिकोण से जहाँ भी उनको अभाव एवं वंचित दिखते हैं, वहाँ वे सेवा का काम करते हैं।

कोरोना संकट के समय आप सब लोगों के सामूहिक प्रयासों से हमने कोरोना जैसी चुनौतियों से निपटा है। यही हमारी शक्ति एवं सामर्थ्य है। जब भी कोई आपदा एवं संकट आए, देश के अंदर आए या दुनिया के अंदर आए तो भी यह समाज उसके लिए सेवा करते रहता है।

मैं पुन: आप सभी को दिवाली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ, बधाई देता हूँ। आचार्य जी के बताए गए मार्ग पर चलकर हम सब लोग तप-तपस्या, समर्पण और सेवा के साथ काम करें। हम सबके जीवन में दिवाली पर खुशी आए। जहाँ भी हमारी आँखें देखें, वे अभाव को देखें, वंचित को देखें, वहाँ पर हमारे प्रयासों से उनकी दिवाली में भी उजाला आए और यही हमारा संकल्प है। आप सभी को दिवाली की बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत बधाई।